Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY, 2022, VOL-10/51
10.21922/srjhel.v10i51.10225

निश्चित चरों के संबंध में भावी शिक्षकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा का प्रभाव

संतोष बंसल[1] & डॉ. जे. डी. सिंह[2]

[1]शोध अध्येता

[2]शोध निर्देशक, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

Paper Received On: 25 MAY 2022
Peer Reviewed On: 31 MAY 2022
Published On: 1 JUNE 2022

Abstract

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। समस्त क्रियाओं के पीछे एक बल कार्य करता है जिसे प्रेरक बल (Drive force) कहा जाता है। इस संदर्भ में प्रेरणा एक बल है जो प्राणी को कोई निश्चित व्यवहार या निश्चित दिशा में चलने के लिये बाध्य करती है। शिक्षक के द्वारा ही राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति होती है। एक पीढ़ी अपनी संज्ञानात्मक कौशलात्मक और भावनात्मक धरोहर को दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करती है। अतः शिक्षा आन्तरिक व बाह्य विकास की उपादेय प्रक्रिया है। वातावरण बालक की जन्मजात भाक्तियों को निर्देशित तथा प्रोत्साहित करता है। अभिप्रेरणा को व्यवहार के 'क्यों' पक्ष से सम्बन्धित माना गया है। अभिप्रेरणा के कारण व्यवहार में सक्रियता, लक्ष्योन्मुखता तथा निरन्तरता प्रदर्शित होती है और लक्ष्य की प्राप्ति तक व्यवहार में निरन्तरता बनी रहती है। उपलब्धि अभिप्रेरक सभी व्यक्तियों में समान नहीं होता है। किसी में यह अभिप्रेरक काफी अधिक तथा किसी में यह अभिप्रेरक कम होता है। यह अभिप्रेरक व्यक्ति के मन की भावना से सम्बन्ध रखता है, जैसे कि एक व्यक्ति उन स्थितियों जिनमें कि उसका मूल्यांकन किया जा रहा है, अपने कार्यों को व्यवस्थित रूप से करने का प्रयत्न करता है। विद्यार्थियों पर शिक्षा महाविद्यालय के शैक्षिक वातावरण का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। शिक्षा महाविद्यालय का शैक्षिक वातावरण रूचिकर, उत्साह बढ़ाने वाला हो तो विद्यार्थी भी मन लगाकर कार्य करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम या किसी अन्य शैक्षिक पक्ष का मापन है। अतः इस शोध अध्ययन में निश्चित चरों के संबंध में भावी अध्यापकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षणिक निश्पत्ति पर प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः *शिक्षा, भावी अध्यापक/ शिक्षक, अभिप्रेरणा, शैक्षणिक उपलब्धि।*

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

भूमिका (Introduction)

प्रत्येक समाज अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति विद्यालय के माध्यम से ही करता है। बच्चे के सर्वागीण विकास का स्त्रोत विद्यालय है। शिक्षा चूंकि व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का उदात्तीकरण करती हुई उसे एक स्वरूप सामाजिक व्यक्ति एवं उपयोगी नागरिक के रूप में ढालती है। अतः किसी भी राष्ट्र के जीवन में शिक्षा का स्थान न केवल अनिवार्य बल्कि अपरिहार्य भी है। विशेष रूप में प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में तो शिक्षा सामाजिक राजनीतिक जीवन में मेरूदण्ड है। यह सही है कि आज के बालक को कल का राष्ट्र–निर्माता माना गया है। शिक्षा के द्वारा बालक को अपनी आन्तरिक क्षमता को पहचानने में

सहायता मिलती है, जो राष्ट्र–निर्माण में सार्थक भूमिका का निर्वाह कर पाता है। बालक देश के भावी विकास की नींव होता है। अतः यह आवश्यक है कि बालकों का विकास सही दिशा में हो सके और इनके विकास को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। क्योंकि शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास करना ही इसका महत्वपूर्ण उद्दे य होता है। बालकों का यह विकास क्रम जीवन–पर्यन्त चलता रहता है। व्यक्ति अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर क्रिया करता है। अधिगम या व्यवहार में परिवर्तन अनुभव तथा प्रशिक्षण दोनों के द्वारा होता है। जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना हमें कुछ न कुछ अनुभव दे जाती है। फिर उन्हीं परिस्थितियों में हम पूर्व अनुभव के आधार पर अपने आपको तैयार पाते हैं। हम सभी जानते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षक भावी पीढ़ी की सोच को विकसित करने, उन्हे क्रमबद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान कर भारत का जागरुक नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत शिक्षार्थी के ज्ञान का अध्ययन किया जाता है कि अमुक विशय में उसने कितना सीखा तथा कौनसी विशिश्ट योग्यता को विकसित किया है। प्रत्येक छात्र का शैक्षिक आकांक्षा स्तर, बुद्धि और शैक्षणिक निश्पत्ति स्तर विशिष्ट होता है, जो उसे स्वयं का आकलन करने में सहायक होता है। जिसके फलस्वरूप वह भविष्य के लिए विभिन्न योजनाओं व उद्देश्यों को स्वरूप प्रदान करता है।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व (Need and Importance of the Study)

विद्यालय का एक उद्देश्य बालकों का समाजीकरण करना है। इस हेतु विद्यालयों में बालकों में प्रेम, सहयोग, बन्धुत्व एवं सामाजिकता की भावनाओं का विकास करना परमावश्यक है। इन भावनाओं के विकास के लिए स्कूल वातावरण का प्रभावी विद्यालय वातावरण का प्रभावी होना आवश्यक है। शोध के परिणामों से पता चलता है कि छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है और जो भी विद्यार्थी मानसिक रूप से स्वस्थ होता है वह अस्वस्थ बालकों की अपेक्षा शीघ्र ही सीखने में सफल हो जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में बालक–बालिकाओं में अध्ययन रणनीति, अकादमिक प्रदर्शन, समायोजन और कल्याण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए प्रेरणा को बताया गया है। शिक्षा के संदर्भ के रूप में व्यक्तिगत विशेषताएं जैसे बुद्धि, संज्ञानात्मक शैली और व्यक्तित्व का अधिगम में शानदार भूमिका निभाते हैं। उपलब्धि अभिप्रेरणा केवल एक निर्माण नहीं है, बल्कि क्षमता, लक्ष्यों और उपलब्धि उद्देश्यों जैसे विभिन्न निर्माणों को समाहित करता है। कुछ मौजूदा अध्ययनों ने छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं और पूर्व उपलब्धि के ऊपर और उससे परे स्कूली छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणियों के रूप में विविध प्रेरक निर्माणों की जांच की, जिसमें यह दर्शाया है कि अधिकांश प्रेरक निर्माण बुद्धि से परे शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करते हैं। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके वंशानुक्रम और वातावरण दोनों से समान रूप से प्रभावित होता है। शैक्षणिक अनुसंधानों ने यह प्रमाणित किया है कि छात्राध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उसकी शैक्षिक अभिप्रेरणा, मानसिक

स्वास्थ्य और सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंधित होती है। अभिप्रेरणा का मुख्य कार्य अनुभूत आवश्यकता की पूर्ति के लिये व्यवहार को एक निश्चित दिशा देना है। अतः अभिप्रेरणा एक ऐसी अवस्था है, जो प्राणी के व्यवहार को एक निश्चित लक्ष्य प्राप्त करने के लिये उत्प्रेरित करती हैं तथा लक्ष्य प्राप्त होने तक व्यवहार में सक्रियता बनाये रखती है। वर्तमान समय में सफलता उच्च स्तरीय जीवन का पर्याय बन गई है। आज हर व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है। विभिन्न विद्वानों एवं शोधकों का मानना है कि सफल भविष्य के सूचक को शैक्षिक सूचक की सफलता माना है। इसलिए बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि शोधकों को सदैव आकर्षित करती रही है। शिक्षा जगत में हुए शोधों से यह पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि कई संज्ञानात्मक तथा गैर–संज्ञानात्मक कारकों द्वारा प्रभावित होती रहती है।

विद्यार्थी अच्छी शिक्षा लेने के पश्चात अपने कैरियर को प्रभावी बना सकते हैं। इसलिए छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक निश्पत्ति से संबंधित कारकों को जानना और उन कारकों के प्रभाव को समझना बहुत आवश्यक हो गया है। शिक्षण कार्य का आनन्ददायी, प्रभावी एवं सुव्यवस्थित तरीके से संचालन किया जाना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बालक विकास में अध्यापकों की भूमिका का विचार जहन में आते ही हर मनुश्य के समक्ष विद्यालय रुपी बालक के प्रथम समाज की तस्वीर सामने आती है। क्योंकि ''विद्यालय, बालक–बालिकाओं से ही होता है। बालकों में सहयोग के माध्यम से समायोजन व जागरुकता बढ़ने से उनकी बौद्धिकता में भी विकास होना अव यंभावी है। तभी वे विद्यालय परिवार के प्रति अधिक संवेदनशील बनेंगे व पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियों में अधिक सक्रिय भागीदारी करेंगे। महाविद्यालय में कक्षा–कक्ष शिक्षण विधि अधिक सार्थक होगी और स्वस्थ शिक्षक–शिष्य अन्तःक्रिया का विकास होगा। निःसन्देह बालकों का सर्वांगीण विकास हो जाएगा। और यही विद्यालयी गतिविधियों का अंतिम लक्ष्य माना गया`है।'' इसलिए सभी अभिभावकों को अपने बच्चों के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना आव यक है जिससे वे भविष्य में अपनी सीखने की प्रक्रिया को सुगमता से चला सकें और वांछित उपलब्धि की प्राप्ति के लिए सक्षम बन सके। अतः यह शोध कार्य भावी–अध्यापकों की शैक्षणिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा के प्रभाव को जानने के लिए किया गया।

समस्या कथन (Statement of the Problem)

वर्तमान अनुसंधान कार्य हेतु समस्या को **''निश्चित चरों के संबंध में भावी–अध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा का प्रभाव''** शीर्षक के रूप में लिया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस शोध समस्या पर अध्ययन के लिए भोधक द्वारा निम्नांकित उद्देश्यों को लिया गया है।

1. शिक्षक महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राध्यापकों की अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को जानना।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत भावी शिक्षकों की अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि में सहसंबंध को जानना।
3. शैक्षणिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के संबंध में भावी–अध्यापकों (पुरूष और महिला) के मध्य अन्तर को जानना।
4. शैक्षणिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के संबंध में भावी शिक्षकों (उच्च और निम्न बुद्धि) के मध्य अन्तर को जानना।
5. शैक्षणिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के संबंध में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (भाहरी व ग्रामीण क्षेत्र) के मध्य अन्तर को जानना।
6. लिंग व बुद्धि की अन्तःक्रिया के संदर्भ में भावी–अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव को ज्ञात करना।
7. लिंग और क्षेत्र की परस्पर अन्तःक्रिया के संबंध में छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव को जानना।
8. बुद्धि और क्षेत्र की परस्पर क्रिया के संदर्भ में छात्राध्यापकों की शैक्षिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा के प्रभाव को ज्ञात करना।
9. लिंग, बुद्धि और क्षेत्र की परस्पर अन्तःक्रिया के संदर्भ में भावी–अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव को जानना।

शोध परिकल्पनाएं (Hypotheses)

इस अध्ययन में शोधक द्वारा निम्नलिखित भून्य परिकल्पनाओं को अध्ययन में लिया गया है–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राध्यापकों की अभिप्रेरणा और शैक्षणिक निश्पत्ति में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
2. शैक्षणिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के संबंध में भावी पुरूष और महिला अध्यापकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शैक्षिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के संबंध में उच्च व निम्न बुद्धि के भावी –अध्यापकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. शैक्षणिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के संबंध में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के भावी अध्यापकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. लिंग तथा बुद्धि के परस्पर प्रभाव का भावी–शिक्षकों की शैक्षणिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. लिंग और क्षेत्र के परस्पर प्रभाव का भावी– अध्यापकों की शैक्षणिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

7. बुद्धि तथा क्षेत्र से परस्पर संबंधित भावी–अध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. बुद्धि, लिंग तथा क्षेत्र से परस्पर संबंधित छात्राध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनसंख्या व न्यादर्श (Population & Sample)

इस अध्ययन की जनसंख्या वर्तमान में राजस्थान में स्थित 800 से अधिक शिक्षा महाविद्यालयों में पढ़ने वाले लगभग 91,000 बालक–बालिकाएं हैं। इस अनुसंधान कार्य में बीकानेर संभाग के चार जिलों (बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व चूरू) में स्थित 111 शिक्षक–प्राक्षिण कॉलेजों में अध्ययन करने वाले 600 (प्रत्येक जिले से 150 विद्यार्थी) शिक्षार्थियों को लिंग, बुद्धि व क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए यादृच्छिक आधार पर भोध न्यादर्श में शामिल किया गया।

समस्या का परिसीमन (Delimitation of the Problem)

इस शोध की प्रकृति, समयावधि व क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित प्रकार से सीमांकन किया गया–

1. इस अनुसंधान कार्य में राजस्थान के बीकानेर संभाग के चार जिलों (बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व चूरू) के भावी–अध्यापकों को शामिल किया गया।
2. इस शोध कार्य में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के 75 पुरूश और 75 महिलाओं को सम्मिलित किया गया।
3. यह शोध केवल निजी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तक सम्मिलित किया गया।
4. इस शोध कार्य में शिक्षक महाविद्यालयों में पढ़ने वाले द्वितीय वर्श के छात्राध्यापकों को ही लिया गया।

प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द (Definition of the terms to be used)

बी. एड. विद्यार्थी (B.Ed. Student)– शिक्षा स्नातक (बी.एड.) छात्राध्यापकों से आशय है स्नातक की शैक्षणिक उपाधि के पश्चात शिक्षा स्नातक का दो वर्शीय पाठ्यक्रम (Programme) है, जिसका प्रशिक्षण लेने हेतु छात्र शिक्षा महाविद्यालयों में प्रवेश लेते हैं।

अभिप्रेरणा (Motivation)– प्रेरणा प्राणी की वह दैहिक और मानसिक अवस्था है, जो कि विशेश रूप से क्रिया करने हेतु प्रेरित करती है। इस अनुसंधान में शैक्षणिक अभिप्रेरणा से अभिप्राय बालक को रूचियों, आदतों, प्रेरणा, शिक्षण कौशल, पाठ्यक्रम, शैक्षिक निर्देशन के लिये उत्साहित करने से सम्बन्धित है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शैक्षणिक उपलब्धि (Academic Achievement)– शैक्षणिक निश्पत्ति या उपलब्धि भौक्षिक क्षेत्र में बालकों, अध्यापकों और शिक्षण विधियों का मापन है। शैक्षणिक उपलब्धि से अभिप्राय न्यायदर्श के छात्राध्यापकों की पिछली कक्षा प्राप्त वास्तविक अंकों से है। इस शोध कार्य में शैक्षिक निश्पत्ति से तात्पर्य छात्राध्यापकों के स्नातक परीक्षा के प्राप्तांकों के कुल प्रतिशत से है।

लिंग (Gender)– इस अध्ययन में लिंग से आशय पुरूष और महिला भावी अध्यापकों के संबंध में लिया गया है।

बुद्धि (Intelligence)– इस अध्ययन में बुद्धि से तात्पर्य बालक की सामान्य मानसिक योग्यता (General Mental Ability) से लिया गया है। इसे दो भागों में बांटकर अध्ययन किया गया–

1. निम्न बुद्धि स्तर (Low Intelligence Level)
2. उच्च बुद्धि स्तर (High Intelligence Level)

क्षेत्र (Area)– अनुसंधान के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थी के क्षेत्र से तात्पर्य उनके परिवार के निवास स्थान व शैक्षिक पृष्ठभूमि से है। इसे भी दो भागों में बांटकर अध्ययन किया गया–

1. शहरी (Urban)
2. ग्रामीण (Rural)

शोध विधि, प्रविधि एवं उपकरण (Method, Tools & Techniques)

लिंग, बुद्धि और क्षेत्र के संबंध में छात्राध्यापकों की शैक्षणिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा के प्रभाव को ज्ञात करने हेतु सर्वेक्षण विधि को अपना गया। जिसमें अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले कॉलेजों के छात्रों के विचारों को मानकीकृत व अमानकीकृत उपकरणों की सहायता से इकठ्ठा किया गया है।

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिप्रेरणा मापन करने हेतु स्वःनिर्मित मापनी दत्त संग्रह करने के लिए प्रयोग किया गया है।
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की बुद्धि को मापने हेतु डा. आर. के. टंडन द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता मापनी (General Mental Ability Scale) को उपयोग किया गया है।
3. छात्राध्यापकों की शैक्षणिक निश्पत्ति का अध्ययन वार्षिक अंकों के आधार पर किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियां (Statistical Techniques)

इस शोध अध्ययन में दत्त विश्लेषण करने के लिए अग्रांकित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया–

1. विवरणात्मक विश्लेषण (Descriptive Analysis)– प्रदत्तों के विवरणात्मक विश्लेशण हेतु सहसंबंध, प्रतिशत, मध्यमान मानक विचलन को प्रयुक्त किया गया।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

2. विभेदात्मक विश्लेषण (Differential Analysis)– विभिन्न चरों के आधार पर बी.एड. छात्राध्यापकों की शैक्षिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा के प्रभावमें अन्तर व सार्थकता जांचनें हेतु टी–परीक्षण (t-test) व एफ–परीक्षण को प्रयुक्त किया गया।

मुख्य निष्कर्ष (Major findings)

इस भाोध में आंकडों का विश्लेषण तथा विवेचन करने के प्श्चात् निम्नांकित मुख्य परिणाम प्राप्त हुए हैं–

(1) सारणी संख्या 4.5 से समस्त बीकानेर संभाग के भावी–शिक्षकों की अभिप्रेरणा प्राप्तांकों का विश्लेषण करने से मालूम होता है कि–

1. समस्त बीकानेर संभाग में 5.16 प्रतिशत छात्रों की अभिप्रेरणा नगण्य अर्थात बहुत कम पायी गई।
2. लगभग 12 प्रतिशत भावी–शिक्षकों कीअभिप्रेरणा आंशिक अर्थात सामान्य से कम पायी गई।
3. सबसे अधिक लगभग 40 प्रतिशत भावी अध्यापकों की अभिप्रेरणा सामान्य पायी गई।
4. करीब 36 प्रतिशत छात्राध्यापकों की अभिप्रेरणा बहुत अच्छी पायी गयी।
5. करीब 7 प्रतिशत भावी–अध्यापकों की अभिप्रेरणा अति उच्च अर्थात श्रेश्ठ पायी गई।

अतः मुख्य परिणाम ज्ञात होता है कि समस्त बीकानेर संभाग में सबसे अधिक करीब 40 प्रतिशत बी. एड. छात्राध्यापकों की अभिप्रेरणा सामान्य प्राप्त हुई है।

(2) सारणी संख्या 4.10 के अनुसार संपूर्ण बीकानेर संभाग के भावी–शिक्षकों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों की विवेचना से स्पष्ट होता है कि–

1. समस्त बीकानेर संभाग में 37 प्रतिशत छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि नगण्य अर्थात बहुत कम पायी गई।
2. लगभग 38 प्रतिशत भावी–अध्यापकों की शैक्षणिक निश्पत्ति आंशिक अर्थात सामान्य से कम पायी गई।
3. करीब 17 प्रतिशत भावी अध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य पायी गई।
4. 6 प्रतिशत छात्राध्यापकों की शैक्षिक निश्पत्ति बहुत अच्छी पायी गई।
5. करीब 0.5 फीसदी बी.एड. शिक्षार्थियों की शैक्षणिक निश्पत्ति अति उच्च अर्थात श्रेश्ठ पायी गई।

अतः मुख्य निष कर्श के रूप मेंसमस्त बीकानेर क्षेत्र में सर्वाधिक 38.33 फीसदी भावी–अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य से कम पायी गई है।

(3) सारणी संख्या 4.11 को देखने से पता चलता है कि संपूर्ण बीकानेर संभाग के भावी शिक्षकों की अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के प्रदत्तों की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि–

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

1. बीकानेर जिले के भावी अध्यापकों की अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसंबंध (r) का मान 0.26 ($p = 0.001 < .01$) प्राप्त हुआ है। जो 0.01 स्तर पर अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है।
2. श्रीगंगानगर जिले भावी शिक्षकों की अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसंबंध (r) का मान 0.23 ($p= 0.004 < .01$) प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर (2- tailed) पर अभिप्रेरणा और शैक्षिक निश्पत्ति के मध्य सार्थक सहसंबंध दर्शाता करता है।
3. हनुमानगढ़ जिले के विद्याार्थियों की अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसंबंध (r) का मान 0.20 ($p = 0.011< .05$) प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर (2- tailed) पर अभिप्रेरणा व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध प्रदर्शित करता है।
4. चूरू जिले भावी शिक्षकों की अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसंबंध (r) का मान 0.19 ($p = 0.019 < .05$) प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर अभिप्रेरणा तथा शैक्षणिक निश्पत्ति के मध्य सार्थक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है।
5. निश्कर्शतः पूरे बीकानेर संभाग में भावी शिक्षकों की अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसंबंध (r) का मान 0.22 ($p = 0.00 < .01$) प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर अभिप्रेरणा और शैक्षणिक निश्पत्ति के मध्य सार्थक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है। अतः ज्ञात हुआ है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पढने वाले छात्रों की अभिप्रेरणा तथा शैक्षणिक निश्पत्ति के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

(4) तालिका संख्या 4.16 से स्पश्ट होता है कि संपूर्ण बीकानेर संभाग के पुरूश और महिला भावी अध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर स्वतंत्रता अंश 598 पर टी.–मान .09 प्राप्त हुआ है। जोकि 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.96 से कम प्राप्त हुआ है। इसलिए पुरूश और महिला भावी अध्यापकों की शैक्षणिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा के प्रभाव के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

(5) सारणी संख्या 4.21 को देखने से पता चलता है कि संपूर्ण बीकानेर संभाग के उच्च और निम्न बुद्धि के भावी अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव के प्राप्ताकों का सांख्यिकीय वि लेशण करने पर स्वतंत्रता अंश 598 पर टी.–मान 5.57 प्राप्त हुआ है, जोकि 0. 05 स्तर पर तालिका मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः समस्त बीकानेर संभाग के उच्च व निम्न बुद्धि के भावी– अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव के आधार पर मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

(6) तालिका संख्या 4.26 से स्पश्ट होता है कि समस्त बीकानेर संभाग के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव के प्राप्ताकों का विश्लेषण करने पर स्वतंत्रता अंश 598 पर टी–मान 0.45 प्राप्त हुआ है। यह 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.96 से कम प्राप्त हुआ है। इसलिए समस्त बीकानेर संभाग के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव के आधार पर मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

(7) सारणी संख्या 4.31 से ज्ञात होता है कि बुद्धि और लिंग दोनों का सामूहिक प्रसरण अर्थात वर्गों के योग का माध्य (Mean Square) 25.17 पाया है जिसका परिकलित एफ मान (F-Value) 0. 93 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 के सार्थकता स्तर पर स्वातन्त्रय अंश ($F_{1,599}$) के तालिका मान 3.84 से कम है। अतः इससे यह परिणाम प्राप्त होता है किसमस्त बीकानेर संभाग के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में दोनों चरों (बुद्धि व लिंग) के परस्पर प्रभाव के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।

(8) तालिका संख्या 4.36 से मालूम होता है कि क्षेत्र और लिंग दोनों का सामूहिक प्रसरण अर्थात वर्गों के योग का माध्य (Mean Square) 0.92 है जिसका परिकलित एफ मान (F-Value) 0.02 ज्ञात हुआ है, जोकि .05 के सार्थकता स्तर पर स्वातन्त्रय अंश ($F_{1,599}$) के तालिका मान 3.84 से कम है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समस्त बीकानेर संभाग के भावी शिक्षकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में दोनों चरों यथा–क्षेत्र व लिंग के परस्पर प्रभाव कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

(9) तालिका संख्या 4.41 से मालूम होता है कि समस्त बीकानेर क्षेत्र के बुद्धि तथा क्षेत्र दोनों का सामूहिक प्रसरण अर्थात वर्गों के योग का माध्य (Mean Square) 93.84 है जिसका परिकलित एफ मान (F-Value) 3.53 ज्ञात हुआ है। यह 0.05 के सार्थकता स्तर पर स्वातन्त्रय अंश ($F_{1,599}$) के तालिका मान 3.84 से कम है। अतः इससे यह परिणाम प्राप्त होता है कि भावी–शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में दोनों चरों (बुद्धि और क्षेत्र) के परस्पर प्रभाव के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(10) तालिका संख्या 4.46 से ज्ञात होता है कि पूरे बीकानेर संभाग के तीनों का सामूहिक प्रसरण अर्थात वर्गों के योग का माध्य (Mean Square) 61.24 है जिसका परिकलित एफ मान (F-Value) 2.31 ज्ञात हुआ है। यह .05 के सार्थकता स्तर पर स्वातन्त्रय अंश ($F_{1,599}$) के तालिका मान 3.84 से कम है। अर्थात् समस्त भावी–अध्यापकों की शैक्षिक निश्पत्ति पर अभिप्रेरणा से संबंधित लिंग, बुद्धि व क्षेत्र में परस्पर प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया है। निष्कर्षतः तीनों चरों के

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

परिप्रेक्ष्य में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

किसी भी अध्ययन का शैक्षिक प्रभाव उसकी सार्थकता का प्रतीक होता है। अभिप्रेरणा एक ऐसी अवस्था है, जो शिक्षार्थी की निश्पत्ति को प्रभावित करती है। यह प्रशिक्षणार्थी को इस योग्य बनाती है कि वे अपने कार्यक्षेत्र में अपनी भूमिका के सम्बन्ध में अपना योगदान तय कर सके और आगे बढ सकें। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र जब कोई शोध किया जाता है, तो उस अध्ययन की उपादेयता, महत्व, प्रकृति आदि कई बातों का औचित्य सिद्ध करना आवश्यक है। ताकि उसके द्वारा यह बता सकें कि इस अनुसंधान के परिणाम और निश्कर्श शिचा जगत को किस तरह से प्रभावित करेंगे। इसलिए शैक्षणिक निहितार्थ को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. **शिक्षकों की दृष्टि से :** इस शोध कार्य से अध्यापकों को अपने कार्य में फलदायक मार्गदर्शन व महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हो सकेंगे। इस शोधकार्य द्वारा अध्यापक वर्ग भी अपने स्कूल के बालकों की शैक्षिक निश्पत्ति के प्रति जागरूक बनेगा। वह शैक्षिक संस्था के कार्यों, अपनी क्षमताओं, अपने कार्यों, अपने शैक्षिक कार्यों के सम्बन्ध में स्वयं सोच–समझ कर अभिप्रेरणा व विश्वास के साथ अपनी योग्यता को अपने व विद्यालय के योगदान के परिप्रेक्ष्य में विकसित कर सकेगा।
2. **संस्था प्रधान हेतु :** एक अध्यापक अपने विद्यालय की धुरी होता है। इसलिए इस अनुसंधान के द्वारा अध्यापक के व्यवहार में पाये जाने वाले दोषों से अवगत करा संगठन को निरंतर विकास की ओर प्रेरित करने में मदद कर सकेगा। संस्था प्रधान अपने विद्यालय के शिक्षकों को काम के लिए अभिप्रेरित कर विद्यालय उन्नति में उनकी अधिकतम कार्य क्षमता का उपयोग कर सकेगा।
3. **विद्यालय की दृष्टि से :** स्कूल के आधार–स्तम्भ स्वयं अध्यापक होते हैं जिन पर विद्यालय रुपी भवन अपने सिर उठाये खड़े रहते हैं। अध्यापकों की अभिप्रेरणा विद्यालय की व्यवस्था को प्रभावित करती है। अतः अध्यापक इन सब से परिचित होकर शिक्षण कार्य व विद्यालय व्यवस्था में सुधार लाकर स्तर को उन्नत बना सकेंगे।
4. **सामाजिक दृष्टि से :** शिक्षक समाज, व देश का मार्गदर्शक होते हैं, तथा देश के लिये सुयोग्य नागरिक तैयार कर एक उत्पादन इकाई का निर्माण करते हैं। अध्यापकों का अपने व्यवसाय के प्रति संतोष– असंतोष छात्रों के व्यवहार में प्रतिबिंबित होता है। शिक्षक ही अपने बालकों में स्वस्थ नागरिक व स्वच्छ समाज तथा देश का निर्माण कर सकता है। अध्यापक अपने नेतृत्व व्यवहार में और कुशलता लाकर साथी शिक्षकों के सहयोग से स्वच्छ समाज निर्माण करने में मदद ले सकेंगे।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

5. **अनुसंधान की दृष्टि से :** अनुसंधान में भावी अध्यापकों के व्यवहार और उनकी भौक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करा सकेगा तथा संपूर्ण शिक्षा जगत में इसकी सार्थकता सिद्ध कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ (Bibliography)

Acharya Ramamurti, (1990). Report of the Review Committee on NPE 1986. New Delhi: Govt. of India Press.

Affum-Osei Emmanuel 2014). Achievement Motivation, Academic Self-Concept and Academic Achievement among High School Students.European Journal of Research and Reflection in Educational Sciences. Vol. 2 No. 2, 2014.

Agrawal, J.C. (1983). Educational Research, New Delhi: Arya Book Depot.

Bhargava, Mahesh (1985).Modern psychological testing and Measurement, Agra: Har Prasad Bhargava.

Cochran, W.G., (1959). Sampling Techniques, Bombay: Asia Publishing House, Students' education 1959.

Fred, N. Kerlinger (1983). Foundations of Behavioral Research. New Delhi: Surjeet Publications.

Garrett, H.E. (1987). Statistics in Psychology and Education. Bombay: Vikils, Feffer & Simsons Pvt. Ltd.

Kothari, C.R. (1996). Research Methodology – 'Methods & Techniques'. New Delhi: Wishwa Prakashan.

Verma, J. (1992). A Study of Learning Style, Achievement Motivation, Anxiety and other Ecological Correlates of High School Students of Agra Region. In Fifth Survey of Educational Research, Vol. 1(1997) NCERT, New Delhi.

WEAC (2005). Variables affecting student achievement. Available at http://www.weac.org/ resource/primer/variable

Yadav, M.S. &Mitra, S.K. (1989). Educational Research Methodological perspective, CASE, Baroda.

Zhu, Y., & Leung, F. K. S. (2010). Motivation and achievement: Is there an east Asian model? International Journal of Science and Mathematics Education (2011), 9, 1189–1212.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language